साप्ताहिक

गरुड़ एक्सप्रेस

संपादक : राजेश लक्षकार

MPHIN/36137-T.C.

● वर्ष - 02 ● अंक - 04 | नीमच | बुधवार, 22 नवंबर 2023 | ● पृष्ठ - 8 ● वार्षिक मूल्य - 250 रुपए

GST No. 23CJZPN1646K1ZL
प्रो. निलेश पाटीदार
॥ श्री गणेशाय नमः ॥
M. 6261469354
M. 9589096680
M. 7000631234

एस पी ब्रैकेट्रस

सीमेन्ट से बनी हुई ईंट, पेवर ब्लॉक आदि मिलने का एक मात्र स्थान

पता- नीमच रोड़ जीरन, जिला- नीमच (म.प्र.)

दुर्दशा 7 साल बाद भी पूरा न हो सका ट्रामा सेंटर को बनाने का उद्देश्य

हड्डी रोग विशेषज्ञ नहीं, 2 साल में 569 घायलों को किया रैफर

शहर को ट्रॉमा सेंटर की सुविधा मिले करीब 7 साल पूरे हो चुके है, लेकिन अब तक अस्पताल की पहले और अब की स्थिति में कोई बड़ा अंतर नहीं आया है। पहले भी यहां से गंभीर घायलों को रैफर किया जाता था। अब भी यहां से घायलों को रैफर किया जा रहा है। वर्तमान स्थिति ये है कि यहां हड्डी रोग विशेषज्ञ तक नहीं है, इसलिए पिछले दो साल में ट्रॉमा सेंटर से 569 घायलों को रैफर कर दिया।

· गरुड़ एक्सप्रेस डेस्क

नीमच। ट्रॉमा सेंटर जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, एक ऐसा केंद्र जहां आपात स्थिति में गंभीर घायलों को तुरंत चिकित्सा सुविधा मिल पाए। शहर में ट्रॉमा सेंटर की शुरुआत हुए 7 साल से ज्यादा बीत चुके है, लेकिन जिस उद्देश्य को लेकर इसे बनाया, वह अब तक पूरा नहीं हुआ।

शुरु होने के साथ ही शहर का ट्रॉमा सेंटर विशेषज्ञ चिकित्सकों की कमी से जुझ रहा है। यही कारण है कि जिला अस्पताल में हड्डी रोग विशेषज्ञ नहीं होने से पिछले 2 साल में 569 गंभीर घायलों को अन्य जगह रेफर कर दिया। इसी बात से अंदाजा लगा सकते है कि जिले के मरीजों का ट्रामा सेंटर में किस प्रकार उपचार होता होगा।

घायलों के आंकड़े चौंकाने वाले

शहर के ट्रॉमा सेंटर से रैफर हुए घायलों के आंकड़े चौंकाने वाले है। रोड एक्सिडेंट, दुर्घटना तथा हादसों में घायल लोगों को यहां से सीधे रेफर कर दिया जाता है। इसके अलावा भी जो सुविधाएं मरीजों को ट्रामा सेंटर में मिलनी चाहिए, वे नहीं मिल पा रही है। 3 साल पहले ट्रामा सेंटर में पदस्थ हड्डी रोग विशेषज्ञ रिटायर्ड हुए, फिर लंबे अर्से से पद की पूर्ति नहीं हो पाई, इसके बाद करीब 1 साल पहले ही हड्डी रोग विशेषज्ञ के रुप में डॉक्टर सम्यक गांधी की नियुक्त हुई, लेकिन वह भी ज्वाइनिंग लेकर बिना अनुमति के लंबी छुट्टी पर चले गए। जिससे पिछले दो साल से ट्रामा सेंटर में हड्डी रोग विशेषज्ञ का पद ब्लॉक है। इसलिए नए विशेषज्ञ की नियुक्ति भी नहीं हो पा रही। जिससे दुर्घटना में गंभीर घायलों को रैफर ही करना पड़ रहा है।

डॉक्टरों की कमी है

ट्रामा सेंटर में डॉक्टरों की कमी है। यहां लंबे समय से हड्डी रोग विशेषज्ञ भी नहीं है। इसके लिए शासन को पत्र लिखा है। शासन स्तर पर फाइल भेजी है। घायलों का हर संभव उपचार करते है। समय-समय पर डॉक्टरों की नियुक्ति भी होती है।

महेंद्र पाटील, सिविल सर्जन, जिला अस्पताल, नीमच

बगैर किसी को बताए हो गया शहर में सफाई का सर्वे, 2024 के लिए गाइड लाइन जारी

नगर पालिका अमले को पता तक नहीं चला, गंदगी के चलते रैकिंग गिरने के कयास

· गरुड़ एक्सप्रेस डेस्क

नीमच। शहर में स्वच्छता सर्वेक्षण 2023 हो गया व नगर पालिका के स्वास्थ्य विभाग के अमले को पता ही नहीं चला। इतना ही नहीं, शहर में कचरा उठाने के बजाए अब कर्मचारी उसको जलाकर प्रदूषण बढ़ा रहे है। इन सब के बीच 2024 के स्वच्छता सर्वेक्षण के लिए केंद्र सरकार ने नई गाइड लाइन जारी कर दी है। इसमें नए नियम भी जोड़े है।

शहर में स्वच्छता अभियान को लेकर आधी - अधूरी तैयारी की गई। नपा का स्वच्छता अभियान कागज में तो चला लेकिन मैदानी हकीकत अलग हैं। इन सब के बीच केंद्र सरकार ने स्वच्छता अभियान 2024 की थीम जारी कर दी। इस बार थीम आर - 3 रखी है। नए वर्ष का स्वच्छता सर्वेक्षण अप्रेल माह से शुरू हुआ है व ये मार्च 2024 तक चलेगा। इसका निरीक्षण जुलाई माह में शुरू हो गया है व ये मार्च तक चलेगा। स्वच्छता सर्वेक्षण 2023 का परिणाम फिलहाल नहीं आया है। हालांकि गार्बेज फ्री सिटी का सर्वे हो गया है। जीएफसी सर्वे के बीच ही

घर के पीछे गंदगी पर जुर्माना

अब घर के पीछे गंदगी नजर आई तो उसमें रहने वालों पर जुर्माना लगेगा। इसके अलावा शहर की गलियों में बेहतर सफाई करने को कहा है।

गाइड लाइन मिली

स्वच्छता सर्वेक्षण को लेकर फिलहाल शुरुआत की गाइड लाइन मिली है। नियमित सफाई जारी है। जहां कमी है, उसको दूर कर रहे है।

महेंद्र वशिष्ठ, सीएमओ, नगर पालिका

केंद्र सरकार ने नए स्वच्छता अभियान सर्वे के लिए नए निर्देश जारी किए है। अब जो नए नियम बनाए है उसमें पैरामीटर्स को तीन के स्थान पर छह भाग में बांटा है। इसमें अंक 4830 को बढ़ाकर 5705 किया है। नया सर्वे चार चरण में होगा। इसमें शुरू के दो चरण में शहर में होने वाली सफाई व आमजन को दी जाने वाली सुविधा को देखा जाएगा।

शहर के दो कॉलेज सूरज की किरणों से हो रहे रोशन

हर माह 3 हजार यूनिट से ज्यादा बिजली का हो रहा उत्पादन, 11 रुपए से अधिक की हो रही बचत

शहर के दो प्रमुख कॉलेज आत्मनिर्भर हो गए है। यह दोनों कॉलेज सूरज की किरणें सहेज कर अपने लिए बिजली बना रहे है। इससे भी बड़ी बात यह है कि इस पूरी प्रक्रिया में ना तो कॉलेज और ना ही प्रशासन का एक रुपया खर्च हुआ। इतना ही नहीं खपत से ज्यादा बिजली उत्पादित होने पर कॉलेज उसे बेच भी पाएगा। अब इस तरह के नवाचार जिले के अन्य कॉलेजों में भी करने की तैयारी की जा रही है।

· गरुड़ एक्सप्रेस डेस्क

नीमच। साल 2018 में उच्च शिक्षा विभाग तथा ऊर्जा विकास निगम के बीच समझौता हुआ। जिसके अनुसार प्रदेशभर के कॉलेजों में सोलर पैनल सिस्टम लगाने की योजना बनाई। इसके लिए एक निजी कंपनी से अनुबंध किया।

अनुबंध के तहत कंपनी ने शहर के अग्रणी स्वामी विवेकानंद शासकीय कॉलेज एवं सीताराम जाजू शासकीय कन्या महाविद्यालय की छत पर 25-25 किलोवाट के सोलर प्लांट लगाए। प्लांट लगाने का पूरा खर्चा कंपनी ने ही वहन किया। इसमें प्रशासन व कॉलेज का एक रुपया खर्च नहीं हुआ। कंपनी ने केवल कॉलेज की छत का उपयोग किया। अब ये दोनों कॉलेज सूरज से सहेजी किरणों से स्वयं की बिजली बना रहे है। दोनों प्रमुख कॉलेज बिजली कंपनी से समन्वय बनाकर सोलर प्लांट से बिजली पैदा कर रहे है। बिजली उत्पादन के मामले में शहर के दोनों प्रमुख कॉलेज अब आत्मनिर्भर हो गए हैं।

25-25 किलोवाट के सोलर प्लांट

शहर के शासकीय स्वामी विवेकानंद कॉलेज व सीताराम जाजू कन्या महाविद्यालय की छत पर 25-25 किलोवाट के सोलर प्लॉट लगाए। इसमें 50 से ज्यादा सोलर प्लेट लगी है। इससे प्रति माह 3 हजार से ज्यादा यूनिट बिजली पैदा हो रही है। जो कॉलेज में खपत होने वाली बिजली से ज्यादा है।

यहां भी शुरु हुआ

जिले के दो प्रमुख कॉलेज के बाद अन्य कॉलेज जैसे मनासा, रामपुरा तथा नवोदय विद्यालय में भी में सोलर प्लेट लगाकर बिजली उत्पादित करने का काम शुरु हुआ है। हालांकि कुछ जगह इंस्टालेशन की प्रक्रिया जारी है, लेकिन कंपनी का मानना है कि आने वाले 6 माह में सभी जगह सोलर सिस्टम लग जाएगा।

आंकलन करना है...

जीरो कास्ट में कंपनी ने कॉलेज की छत पर सोलर प्लेट लगाई है। 2018-19 में यह प्लेटे लगा दी थी, लेकिन 2022-23 से इसे शुरु किया है। हाल ही में शुरु हुआ है, इसलिए कितना फायदा या नुकसान हो रहा है। इसका आंकलन करना बाकी है।

· पी. मोतीलाल धाकड़, शासकीय कॉलेज, मनासा

यह टेक्नोलॉजी कभी फेल नहीं हो सकती...

वर्तमान आधुनिक युग में अक्षय ऊर्जा स्रोतों से उत्पादित बिजली का उपयोग करने से जीरो प्रतिशत प्रदूषण फैलता है। यह टेक्नोलॉजी कभी फेल नहीं हो सकती। आने वाले समय में अधिकांश उद्योगों का संचालन इसी से होंगे।

· बसंत कुमार शर्मा, जिला अक्षय ऊर्जा, अधिकारी

24 से सक्रिय होगा विक्षोभ, 26 को बारिश की चेतावनी, फिर बढ़ेगी सर्दी

· गरुड़ एक्सप्रेस डेस्क

नीमच। जिले में गुलाबी सर्दी की शुरुआत हो चुकी है। तापमान में उतार-चढ़ाव का दौर जारी है। दीपावली के बाद अचानक पारा लुढ़का था। अब आसमान में बादलों ने डेरा डाला है। जिससे सर्दी का अहसास कुछ कम हुआ है। ऐसे में 23 व 24 नवंबर के आसपास पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय होगा। जिसके बाद 26 नवंबर को कहीं बादल तो कहीं तेज हवा के साथ हल्की बारिश के आसार है। मध्यप्रदेश के पश्चिमी क्षेत्र यानी रतलाम-नीमच-मंदसौर में बारिश के आसार बन रहे है। जिसके बाद फिर से सर्दी बढ़ेगी। हालांकि इन दिनों आसमान में बादलों की लुकाछिपी जारी है। जिससे कुछ हद तक सर्दी कम हुई है। दीपावली से ठंड की दस्तक हो चुकी है। गुलाबी सर्दी के साथ लगातार तापमान में गिरावट हो रही है। हालांकि वर्तमान में तापमान स्थिर है। जो कुछ दिनों तक बरकरार रहेगा। वहीं मौसम विभाग की माने तो आने वाली 23 व 24 तारीख को पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय होगा। इसके बाद 26 को बारिश के आसार है। जिसके बाद एक फिर से तेजी से तापमान में गिरावट होगी। इससे पहले दीपावली पर अचानक न्यूनतम तापमान में गिरावट हुई थी। जो अब तक स्थिर है।

दिन में कूलर-पंखें बिल्कुल हो गए बंद

लोगों ने पहले ही संदूक में रखे ऊनी वस्त्र बाहर निकाल लिए, बढ़ती सर्दी के साथ कूलर-पंखें पूरी तरह से बंद हो गए है। तड़के ठंड का सबसे ज्यादा प्रभाव महसूस हो रहा है। जिससे अधिकांश लोग जल्दी उठने से परहेज कर रहे है। फिलहाल क्षेत्र में उत्तर-पूर्वी हवाओं का असर है। हालांकि बादलों की लुकाछुपी से हवाएं ज्यादा प्रभावशाली नहीं है, लेकिन जैसे ही बादलों का दबाव कम होगा। वैसे उत्तरी-पूर्वी हवाएं अपना असर दिखाएगी।

दीपावली के दूसरे दिन लूढक़ा था 4 डिग्री तापमान

दीपोत्सव पर्व से सर्दी की शुरुआत हो चुकी है। दूसरे दिन अचानक 4 डिग्री तक तापमान में गिरावट देखी गई। वहीं अधिकतम तापमान में भी गिरावट हुई थी। 9 नवंबर को अधिकतम तापमान 32 डिग्री के आसपास था। जो 15 नवंबर को 29 डिग्री रह गया। दीपावली के बाद 14 नवंबर को न्यूनतम तापमान 13 डिग्री पर पहुंच गया था। मौसम विभाग की मुताबिक फिलहाल मौसम स्थिर रहेगा। हालांकि बादलों के छटने से मौसम में उतार-चढ़ाव जारी रहेगा। अगले सप्ताह क्षेत्र में पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय होने की उम्मीद है। जिसके बाद तापमान में फिर से गिरावट होगी।

हैकर्स हुए सक्रिय बैंक खातों में लगा रहे सेंध

· गरुड़ एक्सप्रेस डेस्क

नीमच। विधानसभा चुनाव में साइबर अटैक के मामले बढऩे के साथ हैकर्स भी सक्रिय हो गए हैं। चुनावी प्रचार प्रसार के नाम पर मोबाइल उपभोक्ताओं को तरह-तरह के मैसेज भेजे जा रहे हैं। हाल ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम से मैसेज विभिन्न ग्रुप में वायरल हो रहा है, जिसमें बीजेपी को वोट देने के लिए 28 दिन का फ्री रिचार्ज की बात कही जा रही है। जबकि वास्तव में लिंक पर क्लिक करने के बाद हैकर्स यूजर्स की जानकारी लेकर उसके बैंक अथवा यूपीआई खाते से ही पैसे निकाल रहे हैं। साइबर विशेषज्ञों का कहना है कि चुनाव के नाम पर और अधिक साइबर हमले, भ्रमित करने वाले मैसेज और मोबाइल यूजर्स को लुभाने की कोशिश की जाएगी।

डेबिट/क्रेडिट कार्ड की मांगते हैं जानकारी

फर्जी यूआरएल में हैकर्स सामान्यत: डेबिट और क्रेडिट कार्ड की जानकारी मांगते हैं। हैकर्स यूपीआई खाते तक भी पहुंच जाते हैं। इससे फ्री में रिचार्ज की बजाय मोबाइल यूजर्स के खाते से राशि डेबिट हो जाती है।

यूजर्स यह बरतें सावधानी

- ऐसे लिंक पर कभी भी क्लिक न करें जो प्रामाणिक न लगें।
- किसी अज्ञात प्रेषक की ओर से प्रेषित किए गए लिंक पर क्लिक न करें।
- मैसेज भेजने वाले का नाम जांचें। यदि टेलीकॉम विभाग ऐसा कोई संदेश भेजता है तो भेजने वाले के नाम में डीआईटी जैसा की-वर्ड शामिल होगा।
- ऐसे किसी भी लिंक पर क्लिक करने से पहले यूआरएल को अच्छे से पढ़ लें।
- जीओवी डोट इन डोमेन के झांसे में न आएं। सभी जीओवी डोट इन डोमेन भारत सरकार के नहीं हैं।

हर दिन सैकड़ों यात्री काउंटर से ले रहे जनरल टिकट, यूटीसी नहीं कर रहे उपयोग

घर बैठे टिकट बुक करने की रेलवे ने दी सुविधा

रेलवे ने यात्रियों को यूटीएस मोबाइल ऐप के जरिए जनरल टिकट लेने की सहूलियत दी है, लेकिन अधिकतर यात्री इस सुविधा से अंजान हैं। बड़ी बात यह है कि प्रतिदिन नीमच रेलवे स्टेशन से 1200 से अधिक यात्री काउंटर पर लाइन में लगकर जनरल टिकट खरीदते हैं, लेकिन वे ऐप का इस्तेमाल नहीं करते। ऐसे में रेलवे की सुविधा बेकार साबित हो रही है। जब हमने इस संबंध में जब यात्रियों से पूछताछ की तो उनका कहना था कि यह सुविधा अच्छी है, लेकिन उन्हें इसकी जानकारी नहीं थी। जिसकी वजह से वे उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। हैरानी की बात यह है कि स्थानीय स्तर पर भी यात्रियों को जागरुक करने में दिलचस्पी नहीं दिखाई जा रही है।

• गरुड़ एक्सप्रेस डेस्क

नीमच। बता दें कि रेलवे ने यूटीएस मोबाइल ऐप से रेलवे स्टेशन के 20 किलोमीटर के दायरे से जनरल टिकट बुक करने की सुविधा दी है। यानी घर बैठे भी आप जनरल टिकट मोबाइल से बुक कर सकते हैं।

15 नवंबर 2022 से पहले तक दायरा 5 किमी का ही था। इस ऐप से किसी भी ट्रेन का जनरल, प्लेटफॉर्म टिकट के अलावा एमएसटी भी बुक किया जा सकता है। रेलवे ने यात्रियों की जनरल टिकट के लिए काउंटरों पर लगने वाली कतारों से निजात दिलाने के लिए यह ठोस कदम उठाया था। साथ ही ऑनलाइन टिकट बुक कराने को बढ़ावा देने से कैशलेस प्रणाली को भी बढ़ावा मिलेगा। यात्रियों को घर बैठे अनारक्षित टिकट बुकिंग के लिए यूटीएस मोबाइल ऐप की सुविधा मुहैया कराई गई है।

यह है उद्देश्य

रेलवे ने यात्रियों को टिकट काउंटरों में लगने वाली कतारों से निजात दिलाने, शीघ्र टिकट उपलब्ध कराने व टिकटिंग प्रणाली को गतिशील बनाने और कैश लेस प्रणाली को बढ़ावा देने के उद्देश्य से घर बैठे अनारक्षित टिकट बुकिंग के लिए यूटीएस मोबाइल ऐप की सुविधा प्रदान की है। अनारक्षित टिकट पर यात्रा करने वाले यात्री अपने मोबाइल पर इस ऐप को डाउनलोड करके ट्रेन में यात्रा के लिए अनारक्षित टिकट बुक कर सकते हैं। इस ऐप से किसी भी स्टेशन के लिए अनारक्षित टिकट प्राप्त किया जा सकता है।

पहले पांच किमी का ही था दायरा

रेलवे ने यह योजना स्टेशन से 5 किमी दूर रहने वाले यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए शुरु किया था। प्रारंभ में इस ऐप के जरिए केवल दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के अंतर्गत ही टिकट बुक होता था। हालांकि रेलवे ने यह खामी दूर कर ली। इसके बाद भी इस सुविधा का लाभ यात्री नहीं ले रहे थे। इसके बाद रेलवे ने 5 किमी के दायरे को बढ़ाकर 20 किमी कर दिया गया है। यात्री अब 20 किमी के दायरे तक अपना अनारक्षित टिकट बुक कर सकेंगे।

ऐसे बुक करें यूटीएस ऐप से टिकट

- अनारक्षित टिकट बुक करने के लिए गूगल प्ले स्टोर, एप्पल स्टोर से यूटीएस मोबाइल ऐप डाउनलोड करें तथा रजिस्ट्रेशन हेतु साइन अप करें।
- लॉगिन आईडी, मोबाइल नंबर रजिस्टर्ड करें तथा मैसेज से प्राप्त चार अंकों के पासवर्ड का उपयोग करें।
- टिकटों के प्रकार का चयन करें।
- टिकट के भुगतान हेतु आर-वैलेट का उपयोग करें। आर-वैलेट को डेबिट कार्ड, नेट बैंकिंग, यूपीआई अथवा यूटीएस काउंटर द्वारा रिचार्ज किया जा सकता है।
- डेबिट कार्ड, नेट बैंकिंग, यूपीआई द्वारा भी भुगतान किया जा सकता है
- आर वैलेट से रिचार्ज पर तीन प्रतिशत बोनस भी प्राप्त होता है।

कैसे कटेगी गर्मी

प्रतिवर्ष ओवरफ्लो होने वाले डैम के हालात ये कि मात्र 37 प्रतिशत ही भर पाए

पेयजल आपूर्ति जिन डैम के सहारे होती है, वो सूखे ही रहे बांध-तालाब, कहीं 40 फीसदी पानी

• गरुड़ एक्सप्रेस डेस्क

नीमच। जिले में इस बार बारिश न के बराबर हुई। औसत बारिश जो हर बार होती है, उसका भी अभाव रहा। ऐसे में नीमच, जावद व मनासा विकासखंड में आने वाली आबादी को पेयजल की आपूर्ति जिन डैम के सहारे होती है, वो सूखे ही रहे। प्रतिवर्ष ओवरफ्लो होने वाले डैम के हालात ये हैं कि ये मात्र 37 प्रतिशत ही भर पाए हैं। ऐसे में बड़ा सवाल ये है कि गर्मी कैसे कटेगी। जिनकी जिम्मेदारी इस मामले में चिंतन की है, वे योजना बनाने के समय चुनाव में व्यस्त हैं।

जिले में प्रमुख रुप से 23 प्रकार के छोटे-बड़े डैम हैं। इनमें प्रमुख रूप से मोरवन डैम, ठिकरिया डैम, अमरपूरा डैम, बेसला डैम, जीरन डैम, हरकियाखाल आदि है। इनमें से भरभडिया डैम की क्षमता 0.27 मैट्रिक लीटर, लसूडिया हाड़ा टैंक, पलराखेड़ा टैंक, बोरखेड़ी टैंक, मालखेड़ा टैंक, बनी टैंक, बामेश्वर टैंक वो है, जहां एक इंच भी पानी नहीं भरा। ऐसे में विधानसभा चुनाव में चुनकर आने वाले जनप्रतिनिधियों के सामने पहली चुनौती पेयजल की व्यवस्था करना रहेगा। इतना ही नहीं, पेयजल के साथ-साथ सिंचाई के लिए भी पानी की कमी को पूरा करना चुनौती रहेगा।

जिले में कुल तालाब... जिले में छोटे-बड़े मिलाकर 23 तालाब, टैंक, डैम है। इनमें अमरपूरा, कुडालिया, चंबलेश्वर, मोकमपुरा, जीरन, हरवार, चैनपुरा, जमुनिया, दासानी, धामनिया, भरभडिया, ठिकरिया, मोरवन, हरकियाखाल में अलग-अलग क्षमता के पेयजल स्टोरेज के टैंक है। ठिकरिया में कुल क्षमता 16.57 के मुकाबले 9.78 लाख लीटर पानी भरा है। पूरे जिले में सबसे अधिक पानी यहां पर ही स्टोरज हुआ।

इतनी क्षमता के है ये टैंक... इनकी क्षमता देखी जाए तो मोरवन टैंक 15.76, ठिकरिया टैंक 16.57, चंबलेश्वर टैंक 12.19, जीरन टैंक 3.25, पारदा टैंक 2.46, दासानी टैंक 1.04 एमक्यूएम मीटर क्षमता के है। इनके अलावा हरकियाखाल में स्थित जाजू सागर बांध की क्षमता 21 फीट है।

शहर में नपा घरों में पानी देने के लिए करीब 20 हजार नल कनेक्शन दे रखे है। इन नलों को पाइप लाइन से जोडा गया है। इन पाइप लाइन में हिंगोरिया फिल्टर प्लांट से आने वाले पानी को शहर में बनी 12 टंकियों से सप्लाई किया जाता है।

खेती छोड़ने के बारे में सोच रहे

कभी बारिश अधिक होती, कभी कम होती, कभी बिजली का फॉल्ट हो जाता, कभी ट्रांसफॉर्मर के लिए परेशानी, ऐसे में अब खेती करना परेशानी वाला काम हो गया है। हम तो खेती का काम छोड़ने की सोच रहे हैं। जब बारिश की ही कमी है तो सिंचाई के लिए पानी कैसे मिलेगा।

मदन धाकड़, किसान, मोरवन

23 से तुलसी-शालिगराम विवाह के साथ शुरु होंगे मांगलिक कार्य

देवउठनी ग्यारस के साथ शुरु होगी बैंड-बाजा-बारात की धूम, अगले माह तक शादियों के 19 मुहूर्त

• गरुड़ एक्सप्रेस डेस्क

नीमच। त्योहारों का सीजन संपन्न होने के बाद अब जल्द ही चहुंओर बैंड-बाजा और बारात की धूमधाम देखने को मिलेगी। 23 नवंबर को देवउठनी एकादशी मनाई जाएगी। इसके साथ ही चार माह से बंद मांगलिक कार्य फिर शुरू होंगे। इस दौरान 24 नवंबर से दिसंबर अंतिम माह तक शादियों के 19 मुहूर्त रहेंगे।

बता दें कि बीते जून माह के अंतिम सप्ताह में देव शयन हुए थे। इसके बाद ही मांगलिक कार्यों पर रोक लग गई थी। इसके बाद अब कार्तिक शुक्ल एकादशी पर 23 नवंबर को देव प्रबोधिनी एकादशी पर विवाह आदि मांगलिक कार्य शुरू हो जाएंगे। पंडित जितेंद्र डोंगरे ने बताया कि सनातन मान्यता है देवउठनी ग्यारस एकादशी के दिन भगवान विष्णु चार मास

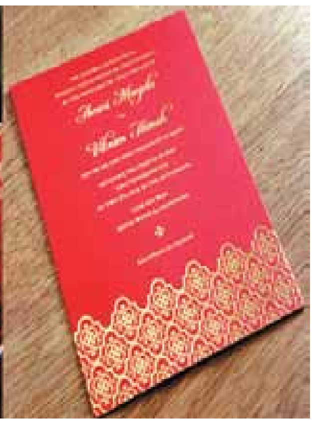

शयन के बाद योग निद्रा से जगाते हैं और मांगलिक कार्यों का आरंभ होता है। सभी देवों ने भगवान विष्णु को चार मास की योग निद्रा से जगाने के लिए घंटा, शंख आदि की मांगलिक ध्वनि के साथ श्लोक उच्चारण किया था। तभी से यह त्योहार मनाया जाता है।

फिर खिल खिलाएगा बाजार

गत सप्ताह तक रोशनी पर्व दीपावली पर बाजार में खासा व्यापार हुआ हैं। अब विवाह आयोजनों की शुरूआत होना हैं। ऐसे में बाजार में मुख्य रुप से ज्वेलर्स, रेडिमेड गारमेंट्स, साडि़यां, इलेक्ट्रानिक्स सामग्री, बर्तन आदि की दुकानों पर लोग आवश्यकता अनुसार खरीदी करते नजर आने लगे हैं। रविवार को शहर में लगे हाट बाजार में ग्रामीणजन घरेलु आवश्यकता के साथ शादी-विवाह आयोजनों के पूर्व घरों को सजाने के लिए रंग-पेंट और साज-सज्जा की सामग्री खरीदते नजर आए।

अधिक मास के चलते बढ़ा चातुर्मास

जानकारी के अनुसार इस बार चातुर्मास की अवधि श्रावण अधिक मास होने से 4 माह से अधिक दिन तक रही। इस अवधि में मांगलिक कार्य नहीं हो पाए। देवउठनी ग्यारस के साथ इसका इंतजार खत्म होने वाला है।

लोगों ने टेंट, हलवाई, बैंड आदि किए बुक

शादियों का सीजन शुरू होने के पूर्व लोगों ने अपनी मुहूर्त तिथियों के लिए बीते माहों से ही टेंट, हलवाई, बैंडबाजे, साउंड सिस्टम और मैरिज गार्डन, धर्मशालाओं तथा बारात के लिए बसों की बुकिंग की गई हैं।

दिसंबर में लगातार सात दिन मुहूर्त

पंडित मुकेश उपाध्याय के अनुसार विवाह के लिए शुक्र, गुरु और राशि के अनुसार, नक्षत्र का शुभ होना जरूरी होता है। पंचांग के अनुसार इस साल देवउठनी एकादशी के बाद मौजूदा नवंबर माह में 24, 27, 28 और 29 नवंबर की तिथि विवाह के लिए शुभ रहेगी। वहीं आगामी दिसंबर माह में एकसाथ सात दिनों तक शुभ मुहूर्त रहेंगे। इसके तहत 3 दिसंबर से 4, 5, 6, 7, 8 व 9 दिसंबर तक लगातार मुहूर्त रहेंगे। उसके बाद 13, 14 और 15 दिसंबर की तिथि भी विवाह व मांगलिक कार्य के लिए शुभ हैं।

देशभर के पर्यटक

एक साथ देख सकेंगे बाघ, चीता और चीतल

कूनो अभ्यारण्य में चीतों के बड़े बाड़े में छोड़े जाने के बाद इस प्रोजेक्ट के सफलता पूर्ण ढंग से निपटने के साथ ही वन विभाग अब अपने ड्रीम प्रोजेक्ट की तैयारी में जुट गई है। यह है रणथंभौर, कूनो और शिवपुरी के बीच एक अनूठा कॉरिडोर बनाने का, ताकि यहां एक बार फिर जानवर एक साथ रह और घूम सकें। इसके लिए अब शिवपुरी के माधव नेशनल पार्क में बाघ लाकर बसाने की कवायद चालू हो गई है। यह कॉरिडोर बनते ही यह इलाका वन्य पर्यटकों के भी आकर्षण का सबसे बड़ा केंद्र बन जाएगा।

रणथंभौर से शिवपुरी तक बनेगा कॉरिडोर

· भोपाल

कूनो नेशनल पार्क को हालांकि एशियाटिक लॉयन को लाकर बसाने के लिए ही तैयार किया गया था। इसकी वजह यही है कि यह जगह रणथंबौर और माधव नेशनल पार्क शिवपुरी के बीच में स्थित था, लेकिन कानूनी और राजनीतिक झमेलों के कारण यहां गुजरात के गिर से लाकर लॉयन तो नहीं बसाए जा सके। लेकिन सितंबर में नामीबिया से लाकर चीते जरूर बसा दिए। सत्तर साल पहले विलुप्त हो गए चीते एक बार फिर भारत के कूनो के जंगलों में कुलांचे भरने लगे। जब हेबिटेट उनके अनुरूप हो गया तो सरकार और वन विभाग अब एक बार फिर कूनो से लेकर शिवपुरी तक बाघ कॉरिडोर बनाने कब प्रोजेक्ट में जुट गया है।

रणथंभौर से शिवपुरी तक होगा टाइगर के लिए बफर जोन...

रणथंभौर से निकलकर अनेक टाइगर एमपी की सीमा में आते जाते रहते हैं, लेकिन यहां ज्यादा समय नहीं रुकते। इसीलिए अब उनके लिए एक आसान और सुरक्षित कॉरिडोर बनाया जाना है। इसके लिए शिवपुरी के माधव नेशनल पार्क का विस्तार करने की योजना है। प्रस्ताव के अनुसार टायगर बफर जोन बनाने के किये इसके दायरे में 13 गांव और लाये जा रहे हैं। इसके साथ ही माधव नेशनल पार्क का विस्तार 600 वर्ग किलोमीटर हो जाएगा और अपवाद को छोड़कर इसकी सीमा कूनो नेशनल पार्क को स्पर्श करने लगेगी। यानी रणथंभौर से लेकर शिवपुर तक एक सुरक्षित कॉरिडोर बन जायेगा, जिसमें वहां से निकलकर बाघ स्वछंद विचरण कर सकेंगे।

सबके पहले मादा बाघ लाने की तैयारी...

माधव नेशनल पार्क में तैयारी है कि जनवरी में तीन बाघ लाकर यहां बसाए जाएं। इसको लेकर उनके लिए वांछित हेबिटेट तैयार करने का प्रयास और परीक्षण चल रहा है। इस प्रोजेक्ट से जुड़े लोगों का कहना है कि उनकी कोशिश है कि 15 जनवरी से पहले यहां तीन बाघ लाकर बसा दिए जाएं। ये तीनो बाघ रणथंभौर से ही लाये जाएंगे और कोशिश हो कि यह मादा ही हों। मादा बाघ लाने का निर्णय भी वन्य विशेषज्ञों के लंबे शोध के बाद हुआ है।

विशेषज्ञों ने रणथंभौर से श्योपुर, मुरैना और शिवपुरी के जंगल तक आने जाने वाले बाघों की आवाजाही पर लंबी निगरानी की तो यह तथ्य प्रकाश में आया कि वहां से निकलकर सिर्फ नर बाघ ही इन क्षेत्र में आते है। लेकिन वे यहां रुकना पसंद नहीं करते, बल्कि जल्दी ही वापस रणथंबौर लौट जाते हैं। इसकी बजह तलांशने पर चौंकाने वाली बात सामने आई। उनकी वापसी इसलिए जल्दी हो जाती है, क्योंकि इस क्षेत्र में मादा बाघ उन्हें नहीं मिलते, जिनसे वे जरुरी नीड पूरी कर सकें। जैसे ही उनकी नींद बढ़ती है वे तत्काल रणथंभौर की तरफ लौट जाते हैं। इसलिए वन्य विशेषज्ञों ने यहां सबसे पहले तीन मादा बाघ बसाने का ही फैसला किया है।

साल 1991 में थे यहां दस बाघ...

माधव नेशनल पार्क नब्बे के दशक में बाघों की रिहायश का एक सबके बड़ा अड्डा था। तब यहां दस बाघ थे। लेकिन देखरेख और सुरक्षा के अभाव में इनकी संख्या कम होती चली गई। अंतिम बार यहां बाघ साल 1996 में देखा गया था। इसी साल यहां की टाइगर सफारी यह कहते हुए बंद कर दी गई थी कि यह स्थान अब टाइगर के लिए उपयुक्त नहीं है। इस सफारी की अंतिम बाघ जोड़ी साल 1996 में थी, जिनको तारा और पेटू के नाम से जाना जाता था। इसके बाद फिर इसे टाइगर सफारी बनाने का फैसला हुआ।

वन्य विशेषज्ञों का मत यहां बस सकते हैं 26 टाइगर...

इससे पहले देश के प्रमुख वन्य विशेषज्ञों ने इस क्षेत्र के भूगोल और पारिस्थितिकी पर गहन शोध किया। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में कहा कि इस क्षेत्र में 26 टाइगर को बसाया जा सकता है, जो यहां आराम से स्वतंत्रता पूर्वक जीवन यापन कर सकते हैं। इसके बाद इस लॉयन सफारी को फिर से शुरु करने का फैसला हुआ। अब इसमें तीन टाइगर लाने की तैयारी है।

टाइगर स्टेट में ही सबसे ज्यादा बाघों की मौत...

...अब तक कितनों का हुआ शिकार

मध्य प्रदेश की पहचान टाइगर स्टेट के रुप में है क्योंकि यहां बड़ी संख्या में बाघ पाए जाते हैं लेकिन आपको जानकर हैरानी होगी की बाघों की मौत के मामले में भी नंबर वन है.

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, बीते 11 माह में एमपी में 33 बाघों की मौत हुई है. इनमें से 6 बाघों का शिकार किया गया है.

बाघों की मौतों के आंकड़ों को देखें तो पता चलता है कि बीते 4 सालों में प्रदेश में 134 बाघों की मौत हुई है. इनमें से 35 बाघों का शिकार किया गया. वहीं सड़क दुर्घटना, कुएं में गिरने और आपसी लड़ाई में 80 बाघ मारे गए हैं. कर्नाटक और उत्तराखंड बाघों की संख्या के मामले में देश में दूसरे और तीसरे नंबर पर हैं लेकिन इन दोनों राज्यों में इस साल कुल 6 बाघों की ही मौत हुई है.

बाघों की बढ़ती संख्या के चलते बाघ अपने संरक्षित क्षेत्र से बाहर निकल रहे हैं. इस वजह से भी बाघों की सुरक्षा के लिए चुनौती बढ़ रही है. एनटीसीए की रिपोर्ट के अनुसार, पिछले 10 सालों में एमपी में 270 टाइगरों की मौत हो चुकी है. इनमें से सबसे ज्यादा 66 टाइगरों की मौत बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में हुई है.

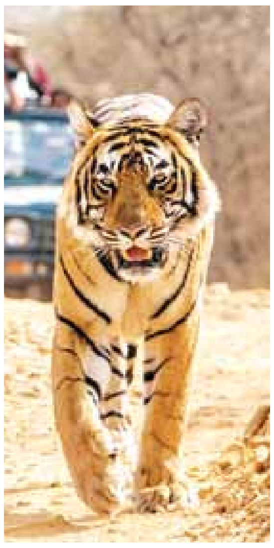

पन्ना टाइगर रिजर्व में भी मिला है बाघ का शव

हाल ही में पन्ना टाइगर रिजर्व में भी एक बाघ का शव मिला है. बाघ फांसी के फंदे पर एक पेड़ से लटका हुआ मिला है. माना जा रहा है कि बाघ का शिकार किया गया है.

घटना के बाद वन विभाग में हड़कंप मच गया है. सीएम ने भी इस मुद्दे पर मीटिंग बुलाई थी.

इस मामले में दो लोगों को गिरफ्तार किया गया है.साथ ही वन विभाग के दो कर्मचारियों को भी लापरवाही के आरोप में सस्पेंड कर दिया गया है. दोनों आरोपियों को दो हफ्ते की न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है. बता दें कि मध्य प्रदेश में 6 टाइगर रिजर्व हैं, जिनमें कान्हा, बांधवगढ़, पेंच, सतपुड़ा, पन्ना और संजय डुबरी नेशनल पार्क शामिल हैं. राज्य में बाघों की संख्या साल 2018 की गणना के अनुसार, 526 है.

प्यार की निशानी है सांका श्याम मंदिर...

आज भी नहीं होती गर्भवती महिलाओं की डिलीवरी

राजगढ़ जिले के नरसिंहगढ़ में एक स्मारक प्रेम के प्रतीक के रूप में पहचाना जाता है. यहां की खूबसूरती और नक्काशी तो विख्यात है ही साथ ही इससे जुड़े कई रोचक किस्से भी हैं. इसे मालवा का मिनी कश्मीर भी कहा जाता है. नरसिंहगढ़ से 16 किलोमीटर दूर स्थित सांका श्याम मंदिर प्रसिद्ध और प्राचीन माना जाता है. जहां भगवान विष्णु के दस अवतार आपको इस मंदिर में देखने को मिलेंगे. जिसमें कई रहस्य छिपे हुए हैं.

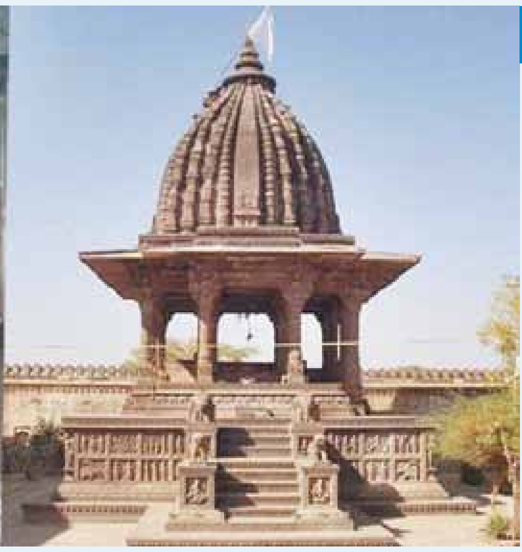

मालवा का मिनी कश्मीर भी कहा जाता

साका श्याम सिर्फ मंदिर के लिए ही नहीं जाना जाता बल्कि प्रकृति की खूबसूरती के लिए भी जाना जाता है. बड़ी तादात में हर साल यहां पर पर्यटक चिड़ीखो में बना वन अभ्यारण घूमने आते हैं. मालवा का मिनी कश्मीर कहां जाने वाला नरसिंहगढ़ के आसपास खूबसूरती देखने को मिलती है. मंदिर की खूबसूरती नक्काशी और भगवान के दर्शन करने के लिए आते हैं. प्रकृति के वातावरण का लुत्फ उठाने भी लोग पहुंचते हैं.

1500 से अधिक मूर्तियां

16-17वीं शताब्दी के इस मंदिर में कई इतिहास छिपा है. इस मंदिर को रानी भाग्यवती ने बनवाया था. उसके बाद से ही राजा और रानी की प्रेम की निशानी इस मंदिर को माना जाता है. इस मंदिर इतिहास की दृष्टि से भी काफी महत्व दिया गया है. बताते हैं कि इसमें पंद्रह सौ देवी-देवताओं की मूर्तियां बनी हुई हैं.

पत्नी ने याद में बनाया मंदिर

नरसिंहगढ़ तहसील मुख्यालय से यह 16 किमी दूर चिड़ीखों के पार्वती नदी के पास स्थित ये गांव है. यहां हर साल एक मेला आयोजित किया जाता है और यह प्रसिद्ध मंदिर 16-17वीं शताब्दी में राजा संग्राम सिंह (श्याम सिंह) की स्मृति में पत्नी भाग्यवती द्वारा बनाया गया था. यहां राजा हाजी वली की एक मुगल सैनिक के साथ हुई मुठभेड़ में मौत हो गई थी. यह मंदिर राज्य सरकार द्वारा संरक्षित है. यह मालवी और राजस्थानी प्रभाव को दर्शाती है. दीवार पर कई सुंदर चित्र है. सुंदर और अच्छी तरह से नक्काशीदार पत्थर और ईंटे को मंदिर के निर्माण के लिए इस्तेमाल किया गया है.

गर्भवती महिला की डिलीवरी नहीं होती

आपको जानकर हैरानी होगी कि आज भी इस गांव में गर्भवती महिला की डिलीवरी नहीं होती है. उसके पीछे का कारण ग्रामीण बताते हैं कि पीढ़ियों से उनके गांव में डिलीवरी नहीं होती क्योंकि स्वच्छता खराब होती है. डिलीवरी होने से गांव में इसलिए पूर्वजों ने भी कभी गांव में डिलीवरी नहीं होने दी और आज भी गांव में या मान्यता मानी जा रही है. जिसके चलते गांव के बाहर ही डिलीवरी की जा सके और गांव को स्वच्छ रखा जा सके.

यहां मांगी हर मुराद होती है पूरी

वैसे तो दुनिया भर में कई सारे धार्मिक स्थल मौजूद है, लेकिन इनमें से कुछ ऐसे धार्मिक स्थल होते हैं जिनकी मान्यता काफी ज्यादा होती है। जी हां ऐसा ही एक धार्मिक स्थल के बारे में आज हम आपको बताने जा रहे हैं जो इंदौर शहर से करीब 50 किलोमीटर दूर विंध्यांचल पर्वत श्रंखला के घने जंगलों की 3000 फीट ऊंची पहाड़ी पर पार्वती माता का प्रसिद्ध मंदिर मौजूद है। आपको बता दें घने जंगलों के बीच 3000 फीट ऊंची पहाड़ी पर पार्वती माता का एक प्रसिद्ध मंदिर है। जहां भक्तों की काफी ज्यादा भीड़ देखने को मिलती है। जानकारी के मुताबिक, यह मंदिर अष्टभुजाधारी प्रतिमा का है। खास बात यह है कि यह मंदिर एक हेक्टर से ज्यादा एरिया में फैला हुआ है। जाम खुर्द गांव में ये मंदिर बसा हुआ है। यहां दूर दूर से लोग घूमने और माता के दर्शन के लिए आते हैं। ये मंदिर महू-मंडलेश्वर रोड पर आता है। अगर आप इस मंदिर में दर्शन के लिए जाना चाहते है तो आपको सबसे पहले इंदौर से महू जाना होगा फिर वहां से बड़गोंदा, मेण के रास्ते से आप यहां पहुँच जाएंगे। अभी मंदिर का निर्माण किया जा रहा है जिसके लिए 2 करोड़ की लागत लगाई जा रही है। मंदिर निर्माण का कार्य बीते चार पांच साल से चल रहा है।

राजा इंद्र ने की थी स्थापना, हर मुराद होती है पूरी

मान्यताओं के अनुसार, राजा इंद्र ने यहां मूर्ति की स्थापना की थी। आप इस मंदिर में माता पार्वती का अलग रुप देख सकते है दरअसल, इस मंदिर में माता को महिषासुर का वध करते हुए दिखाया गया है। मंदिर में माता की प्रतिमा पांच फीट ऊंची है। यहां मांगी गई हर मुराद पूरी होती है। मान्यताओं के मुताबिक, मंदिर के पुजारी ने बताया है कि इस मंदिर की हर मुराद पूरी होती है।

दरअसल, यहां एक लड़की लापता हो गई थी। जो 15 साल की थी। सभी ने उसके मिलने की आस छोड़ दी थी। लेकिन एक महिला ने इस मंदिर में उसके लिए मन्नत मांगी। ऐसे में एक महीने बाद ही वो बच्ची मिल गई। वो भी एक कार्ड के जरिए उसका पता लगा। उस कार्ड पर बच्चे का फोटो और पता लिखा था। इतना ही नहीं यहां जिसकी गोद सुनी रहती है वो भी माता के आशीर्वाद से पूरी हो जाती है।

माता बदलती है 3 रुप

मंदिर के पुजारी ने बताया कि माता अपने 3 रुप बदलती है। यहां नवरात्रि में लाखों भक्तों की भीड़ देखने को मिलती है। कहा जाता है कि पार्वती माता यहां दिनभर में तीन बार रुप बदलती है। ये मंदिर करीब 500 साल पुराना है। इस मंदिर में पुजारी को पूजा करते हुए 40 साल से ज्यादा हो चुके हैं।

घने जंगलों में बसा है 500 साल पुराना पार्वती माता का प्रसिद्ध मंदिर

संपादकीय

खेल की भावना...

विश्व कप के अंतिम नतीजों को लेकर बहुत सारे भारतीय खेल प्रेमी निराश हैं, तो कई लोग इसे राजनीतिक नजरिए से भी देख रहे हैं। जिस तरह भारतीय टीम पूरे खेल के दौरान लगातार जीत दर्ज करती रही और हमारे खिलाड़ियों का प्रदर्शन काफी बेहतर देखा गया, कई कीर्तिमान भी बने, उसमें स्वाभाविक ही उम्मीद बनी थी कि भारत विश्व कप जीतेगा। मगर अंतिम मैच में आस्ट्रेलिया के खिलाफ खेलते हुए वही टीम कमजोर साबित हुई, तो इसे लेकर निराशा स्वाभाविक है।

मगर क्रिकेट को अनिश्चितताओं का खेल कहा जाता है। कब किन स्थितियों में मजबूत टीम भी कमजोर पड़ जाती है, कहना मुश्किल है। कुल मिला कर देखें तो भारतीय टीम का प्रदर्शन अंतिम मैच में भी बुरा नहीं कहा जा सकता। बल्लेबाजी करते हुए उसके तीन खिलाड़ी जल्दी आउट हो गए, इसलिए टीम रक्षात्मक होकर खेलने लगी थी और रनों की दर धीमी पड़ गई। गेंदबाजी और क्षेत्र रक्षण में भी खिलाड़ियों ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी। मगर जिस तरह लोगों में पहले से उत्साह बना हुआ था और पूरा विश्वास था कि भारतीय टीम ही इस बार का विश्व कप जीतेगी, उस धारणा के चलते बहुत सारे लोग इस मैच को खेल भावना से देख नहीं पाए और निराश हुए। जैसा कि हर हार के बाद कमजोर पक्षों को पहचानने का प्रयास किया जाता है, विश्व कप को लेकर भी अलग-अलग कोणों से इसकी पड़ताल हो रही है। बहुत सारे लोग भारतीय टीम की हार का ठीकरा खराब पिच पर फोड़ रहे हैं, क्योंकि आस्ट्रेलियाई टीम ने इसी वजह से पहले गेंदबाजी का निर्णय किया था। मगर उसी स्टेडियम में पहले भी भारतीय टीम खेल चुकी थी और वह उस पिच के मिजाज से अच्छी तरह वाकिफ थी। इसलिए पिच को दोष देना भी ठीक नहीं माना जा सकता। कई लोगों को इस बात पर हैरानी हो रही है कि आखिर के चालीस ओवरों में भारतीय टीम ने केवल चार चौके लगाए। सत्ताईस ओवरों में एक भी चौका-छक्का नहीं लगा। ऐसा क्या हो गया कि अपराजेय दिखते भारतीय खिलाड़ी इतने सुस्त पड़ गए? इसका बड़ा कारण शुरू में ही तीन खिलाड़ियों के आउट हो जाने से टीम पर पड़ा मनोवैज्ञानिक दबाव माना जा सकता है। इस तरह टीम रक्षात्मक होकर खेलती रही। मगर इसमें आस्ट्रेलियाई टीम के गेंदबाजों के कौशल को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि उन्होंने भारतीय बल्लेबाजों को चौके-छक्के जड़ने का मौका बहुत कम दिया। कुछ लोग इसमें सट्टेबाजी का भी अंदेशा जता रहे हैं। चूंकि पहले कुछ मौकों पर ऐसा हो चुका है और उसके चलते कुछ भारतीय खिलाड़ियों पर गाज भी गिर चुकी है। सर्वोच्च न्यायालय ने सट्टेबाजी पर रोक लगाने के लिए एक समिति भी बनाई थी।

देवउठनी एकादशी के दिन नहाने से पहले करें ये काम, धन की नहीं होगी कमी!

हिंदू धर्म में देवउठनी एकादशी तिथि का विशेष महत्व है. इस एकादशी के बाद से सभी मांगलिक कार्यों की शुरुआत होती है. देवउठनी एकादशी के अगले दिन द्वादशी तिथि पर तुलसी विवाह होता है. यही नहीं देवउठनी एकादशी पर भगवान श्रीहरि योग निद्रा से जागते हैं. यही वजह है कि इस दिन तमाम उपायों से व्यक्ति अपनी समस्याओं से छुटकारा पा सकता है.

यदि आप समस्याओं से मुक्ति पाना चाहते हैं तो इसके लिए देवउठनी एकादशी के दिन ये उपाय कर सकते हैं. ज्योतिषाचार्य अविनाश मिश्रा ने बताया कि कार्तिक माह की शुक्ल पक्ष में आने वाली एकादशी तिथि को बहुत ही विशेष माना गया है. इस एकादशी को देवउठनी एकादशी के रूप में जाना जाता है. मान्यता है कि इसी दिन भगवान विष्णु 4 महीने बाद योग निद्रा से जागते हैं. साथ ही इसे प्रबोधिनी एकादशी भी कहा जाता है.

देवउठनी एकादशी का शुभ समय

पं. अविनाश मिश्रा के अनुसार, कार्तिक माह की शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि 22 नवंबर को रात्रि 11:03 बजे से प्रारंभ हो रही है. इसका समापन 23 नवंबर को रात 09:01 मिनट पर होगा. उदया तिथि के अनुसार 23 नवंबर को देवउठनी एकादशी मनाई जाएगी.

हल्दी डालकर करें स्नान

ज्योतिषाचार्य ने बताया कि एकादशी तिथि के दिन भगवान विष्णु की कृपा प्राप्ति के लिए पानी में एक चुटकी हल्दी डालें एवं उससे स्नान करें. साथ ही इस दिन पीले रंग के वस्त्र पहनें, क्योंकि पीला रंग भगवान विष्णु का बहुत प्रिय माना गया है. ऐसा करने से आपके ऊपर भगवान विष्णु की कृपा बनी रहेगी. खासकर आपकी धन संबंधी समस्या दूर होगी.

गाय के दूध से स्नान कराएं

पंडित जी ने बताया कि एकादशी के दिन भगवान विष्णु को पहले शंख में गाय का दूध भरकर स्नान कराएं, फिर इसके बाद गंगाजल या नर्मदा जल से स्नान कराएं. ऐसा करने से व्यक्ति की आर्थिक समस्याएं दूर होंगी. भगवान विष्णु की पूजा के दौरान "ओम नमो भगवते वासुदेवाय नमः" मंत्र का जप करें. इससे जीवन में आ रही परेशानियां दूर होंगी. भगवान विष्णु की पूजा में शुद्ध घी का दीया जरूर जलाएं एवं भोग में तुलसी दल रखकर अर्पित करें.

विवाह में बाधा ऐसे होगी दूर

यदि किसी जातक को विवाह आदि में समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है तो वह भी देवउठनी एकादशी के दिन कुछ उपाय कर सकते है. इसके लिए भगवान विष्णु की पूजा के दौरान उन्हें केसर, पीले चंदन या हल्दी का तिलक लगाएं. इसके बाद उन्हें पीले रंग के फूल अर्पित करें. इससे जल्द ही विवाह के योग बनेंगे. अपनी मनोकामना पूर्ण करना चाहते हैं तो इसके लिए देवउठनी एकादशी के दिन पीपल के पेड़ में जल जरूर अर्पित करें. ऐसा माना जाता है कि पीपल के पेड़ में भगवान विष्णु का वास होता है. जल अर्पित करने से आपकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होंगी.

साप्ताहिक राशिफल (बुधवार | 22 से 28 नवंबर 2023)

मेष

समस्या मानसिक तनाव का बड़ा कारण बन सकती है। कार्यक्षेत्र की चिंताओं को घर लेकर जाने से बचें। कार्यक्षेत्र में सफलता के लिए परिश्रम करने की आवश्यकता रहेगी।

वृष

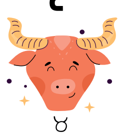

कार्यों में मन मुताबिक सफलता को पाने के लिए धैर्य के साथ निरंतर लक्ष्य की ओर प्रयासरत रहना होगा। परीक्षा-प्रतियोगिता की तैयारी में जुटे हैं तो जमकर अपनी तैयारी करें।

मिथुन

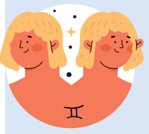

न सिर्फ घरेलू बल्कि कार्यक्षेत्र से जुड़ी चिंताएं घेरे रहेंगी। कामकाज में आवश्यकता से अधिक भागदौड़ बन सकती है। कार्यक्षेत्र में विरोधी हावी होने की कोशिश करेंगे।

कर्क

करिअर-कारोबार की दिशा में प्रयासों में सफलता मिलेगी। जो जातक लंबे समय से रोजी-रोजगार के लिए भटक रहे थे, उन्हें इस दिशा में बड़ी सफलता हाथ लगेगी।

सिंह

कोई भी कदम बहुत सोचकर आगे बढ़ाने की जरूरत है। क्रोध में या फिर भावनाओं में बहकर कोई भी ऐसा निर्णय लेने से बचें, जिससे भविष्य में आपको मुश्किलें आ सकती हों।

कन्या

कुछ उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। कई बार खुद को असमंजस की स्थिति में पाएंगे। ऐसे में किसी बड़े निर्णय को लेने की अपेक्षा उसे आगे के लिए बढ़ा देना उचित रहेगा।

तुला

यह सप्ताह लाभ एवं उन्नति का रहेगा। कार्यक्षेत्र में जूनियर एवं सीनियर का सहयोग प्राप्त होगा। मनचाहे स्थान पर तबादला या फिर कार्य की जिम्मेदारी मिल सकती है।

वृश्चिक

समस्याओं को एक-एक करके सुलझाना चाहिए। एक साथ तमाम काम को हाथ में लेने से बचें, अन्यथा बनते काम भी बिगड़ सकते हैं। कार्यक्षेत्र पर कामकाज का बोझ बना रहेगा।

धनु

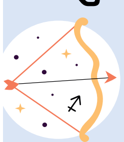

इस सप्ताह उम्मीद से कुछ कम सफलता मिलने पर मन थोड़ा खिन्न रहेगा। कार्यक्षेत्र में भाग-दौड़ हो सकती है। हालांकि जल्दबाजी में किसी बड़ी गलती को करने से बचें।

मकर

इस सप्ताह पास के फायदे में दूर का नुकसान करने से बचना होगा। किसी भी ऐसे प्रलोभन से बचें, जिसमें धन-मान-सम्मान आदि के नुकसान की आंशका हो।

कुंभ

लंबे समय से अटके किसी काम के पूरे हो जाने पर आप राहत की सांस लेंगे। कमीशन पर काम करने वाले लोगों को इष्ट मित्रों की मदद से लाभ के बड़े अवसर प्राप्त होंगे।

मीन

इस सप्ताह अपने कार्यों में सफलता पाने के लिए ज्यादा से ज्यादा सकारात्मक रहने की आवश्यकता है। किसी के बहकावे में आकर किसी से बेवजह उलझने से बचें।

सामान्य परिवार में जन्मे महात्मा गाँधी ने अपने असाधारण कार्यों एवं अहिंसावादी विचारों से पूरे विश्व की सोच बदल दी। आजादी एवं शांति की स्थापना ही उनके जीवन का एक मात्र लक्ष्य था। गांधी जी द्वारा स्वतंत्रता और शांति के लिए शुरू की गई इस लड़ाई ने भारत और दक्षिण अफ्रीका में कई ऐतिहासिक आंदोलनों को एक नई दिशा प्रदान की। मोहनदास करमचंद गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को पोरबंदर जिले के मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। वे जब सात वर्ष के थे, उनका परिवार काठियावाड़ राज्य के राजकोट जिले में जाकर बस गया, जहाँ उनके पिता करमचंद गाँधी दीवान के पद पर नियुक्त थे। वे एक साधारण छात्र थे और स्वभाव से अत्यधिक शर्मीले एवं संकोची थे।

आज़ादी एवं शांति महात्मा गांधी के जीवन का एक मात्र लक्ष्य था

बापू बहुत ही सीधे एवं ईमानदार व्यक्ति थे। वे अपनी दृढ़ता एवं निष्ठा के लिए जाने जाते थे। उनमें कोई विशेष प्रतिभा नहीं थी न ही उन्हें खेलों में रुचि थी। वे अकेला रहना पसंद करते थे। उन्होंने अपने पाठ्यक्रम के अतिरिक्त कभी कोई पुस्तक नहीं पढ़ीं, लेकिन उन्होंने हमेशा अपने शिक्षकों का सम्मान किया और किसी भी परीक्षा में कभी भी नक़ल नहीं की।

कस्तूरबा : आदर्श एवं सेवानिष्ठ पत्नी

कस्तूरबा गाँधी का जन्म 11 अप्रैल 1869 को पोरबंदर में हुआ था। उनके पिता गोकुलदास माखन जी एक धनी व्यवसायी थे। कस्तूरबा गाँधी शादी से पहले तक अनपढ़ थीं। शादी के बाद गाँधीजी ने उन्हें लिखना एवं पढ़ना सिखाया। वे गांधीजी के हर कार्य में उनके साथ दृढ़ता से खड़ी रहीं और दक्षिण अफ्रीका एवं भारत में गाँधीजी के सभी कार्यों में उन्होंने उनका साथ दिया। वे हमेशा गाँधीजी के बताए मार्ग पर चलीं और उन्होंने आश्रम के कठोर एवं सादगीपूर्ण जीवन को भी आसानी से अपना लिया। कस्तूरबा गाँधी अत्यंत धर्मपरायण महिला थीं। गाँधीजी के विचारों का अनुसरण कर उन्होंने भी जातीय भेदभाव करना छोड़ दिया। वे स्पष्टवादी, व्यवहार-कुशल एवं अनुशासित महिला थीं। उच्चतर शिक्षा के लिए गाँधीजी के लंदन जाने के बाद कस्तूरबा गाँधी ने भारत में अकेले रह कर अपने नवजात शिशु - हरिलाल का पालन-पोषण किया। गाँधीजी के चार पुत्र थे - हरिलाल, मणिलाल, रामदास और देवदास।

लंदन में शिक्षा एवं विकट परिस्थितियाँ

सन् 1885 ई० में उनके पिता का देहांत हो गया। परिवार के एक करीबी सदस्य ने उन्हें इंग्लैंड जाकर वकालत की पढाई करने का सुझाव दिया। 4 सितम्बर 1888 को अट्ठारह वर्ष की उम्र में वे साउथेम्पटन के लिए रवाना हो गए। लंदन में शुरूआती कुछ दिन गाँधीजी के लिए अत्यंत कठिन रहे। इंग्लैंड में पढ़ाई पूरी करने के बाद गाँधीजी राजकोट लौट आए एवं कुछ दिनों तक यहाँ रहने के बाद उन्होंने बम्बई में वकालत की। हालाँकि बम्बई में वे खुद को स्थापित नहीं कर सके, जिसके बाद वे राजकोट लौट आए एवं यहाँ फिर से उन्होंने वकालत शुरू की।

भारत छोड़ो आंदोलन

सन 1942 में गाँधीजी ने भारत छोड़ो का नारा दिया जो भारत में ब्रिटिश शासन के अंत का संकेत था। भारत एवं पाकिस्तान के विभाजन ने गाँधीजी को झकझोर कर रख दिया। जब पूरा देश आजादी का जश्न मनाने में व्यस्त था, गाँधीजी नओखली में सांप्रदायिक दंगा पीड़ितों की स्थिति सुधारने की कोशिशों में लगे हुए थे। गाँधीजी अत्यंत साहसी एवं निर्भीक स्वभाव के थे। उनका जीवन और उनके द्वारा दी गयी शिक्षा इस देश के मूल्यों के साथ-साथ मानवता के मूल्यों को भी प्रदर्शित करता है। वे स्वतंत्रता-सेनानियों के लिए एक प्रकाश-स्तम्भ की तरह रहे। उन्होंने स्वंय अहिंसा के मार्ग पर चलकर दुनिया को अहिंसा का पाठ पढ़ाया।

उनके मूल्य हमेशा कायम रहेंगे

गाँधीजी की हत्या के बाद गाँधी युग का अंत हुआ लेकिन उनकी देन एवं उनके मूल्य हमेशा कायम रहेंगें। 30 जनवरी 1948 को जब गाँधीजी दिल्ली स्थित बिड़ला मंदिर से अपनी संध्या प्रार्थना समाप्त कर बाहर निकल रहे थे, उसी समय नाथूराम गोडसे ने उनके सीने पर ताबड़तोड़ तीन गोलियाँ चलाईं। गाँधीजी आज भी हम सब के बीच जीवित हैं। अहिंसा एवं शांति पर दिये गये बापू के सर्वव्यापी उपदेश आज भी दुनिया भर के लोगों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत हैं। भारत के लोग उन्हें प्यार से बापू एवं राष्ट्रपिता के नाम से पुकारते हैं। वे मानवता एवं शांति के प्रतीक हैं।

सुधारक के रूप में गांधीजी का पहला सत्याग्रह

गाँधीजी ने अपना पहला सत्याग्रह सन् 1917 ई० में बिहार के चंपारण जिले से शुरु किया। अंग्रेज़ यहाँ के नील बगान के मालिकों का शोषण किया करते थे। गाँधीजी ने इनके साथ हो रहे अत्याचार का विरोध किया। भारत में सत्याग्रह के रुप में अपने पहले प्रयोग की सफलता ने देश में गाँधीजी की प्रतिष्ठा बढ़ा दी।

असहयोग आंदोलन - गांधी युग की शुरुआत

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में गाँधी युग की शुरुआत सन् 1920 ई० के असहयोग आंदोलन से हुई। भारत में असहयोग आंदोलन का मुख्य लक्ष्य ब्रिटिश सरकार के खिलाफ़ अहिंसक विरोध जताना एवं सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत करना था।

नमक सत्याग्रह - प्रसिद्ध दांडी यात्रा

नमक सत्याग्रह एक ऐसा अभियान था जिसका उद्देश्य औपनिवेशिक भारत में ब्रिटिश नमक कर के खिलाफ अहिंसक विरोध प्रदर्शन करना था। इस अभियान की शुरुआत 12 मार्च 1930 को दांडी यात्रा के रुप में हुई। 5 मई 1930 को गाँधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया एवं सरकार ने इस आंदोलन को दबाने की भरपूर कोशिश की, लेकिन सरकार को इसमें सफलता नहीं मिल पाई। अतः गाँधीजी को 26 जनवरी 1931 को मुक्त कर दिया गया। 8 मई 1933 को गाँधीजी ने हरिजनों के हितलाभ के लिए 21 दिनों के अनशन की घोषणा की।

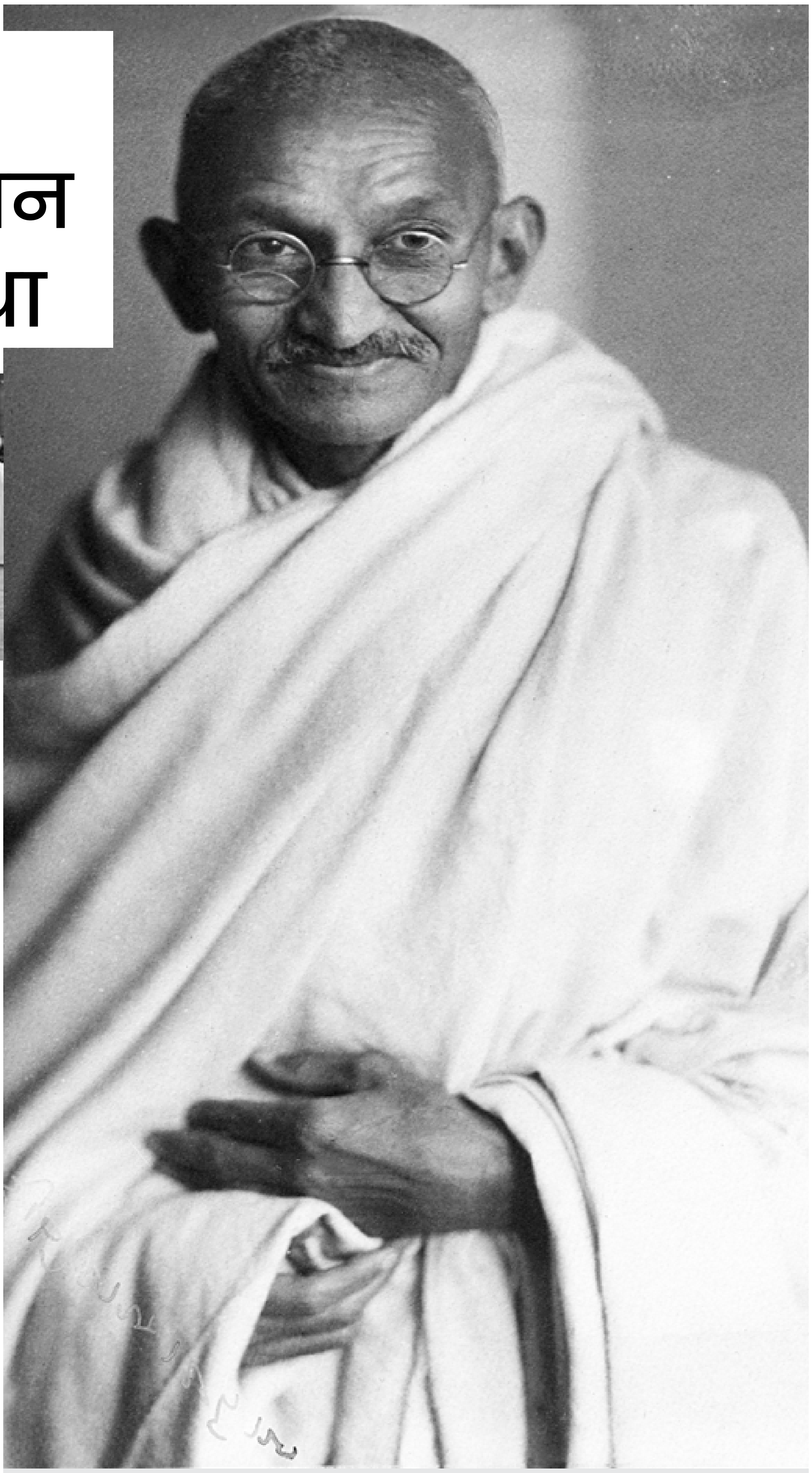

गांधी जी द्वारा बताई गई सूक्तियां

- अहिंसा सबसे बड़ा कर्तव्य है। यदि हम इसका पूरा पालन नहीं कर सकते हैं तो हमें इसकी भावना को अवश्य समझना चाहिए और जहां तक संभव हो हिंसा से दूर रहकर मानवता का पालन करना चाहिए।
- उस प्रकार जिएं कि आपको कल मर जाना है। सीखें उस प्रकार जैसे आपको सदा जीवित रहना हैं।
- आजादी का कोई अर्थ नहीं है यदि इसमें गलतियां करने की आजादी शामिल न हों।
- बेहतर है कि हिंसा की जाए, यदि यह हिंसा हमारे दिल में हैं, बजाए इसके कि नपुंसकता को ढकने के लिए अहिंसा का शोर मचाया जाए।
- व्यक्ति को अपनी बुद्धिमानी के बारे में पूरा भरोसा रखना बुद्धिमानी नहीं है। यह अच्छी बात है कि याद रखा जाए कि सबसे मजबूत भी कमजोर हो सकता है और बुद्धिमान भी गलती कर सकता है।
- आपको मानवता में विश्वास नहीं खोना चाहिए। मानवता एक समुद्र है, यदि समुद्र की कुछ बूंदें सूख जाती है तो समुद्र मैला नहीं होता।
- ईमानदार मतभेद आम तौर पर प्रगति के सुवस्थ संकेत हैं।

गोपाष्टमी पर श्री महावीर गौशाला में हुआ गौमाता के लिए अन्नकूट का आयोजन

15 क्विंटल गुड़ की लापसी, 5 क्विंटल कच्ची सब्जियों से हुआ गायों के लिए भव्य अन्नकूट

गौशाला की गायों को रजत आभूषण,मेहंदी लगाकर,घंटीयां बांध सजाया गया

• गरुड़ एक्सप्रेस डेस्क

जीरन। श्री महावीर गौशाला जीरन में गोपाष्टमी पर्व विशाल स्तर अनूठे आयोजन के साथ मनाया गया। श्री महावीर गौशाला में प्रतिवर्ष मनाये जाने वाले गोपाष्टमी पर्व पर वृहद स्तर पर गौमाता का पूजन तथा गौवंश के लिये विशाल अन्नकूट का आयोजन किया गया। गोपाष्टमी पर्व पर गौशाला में मौजूद 500 गायों को सजाकर,मेहंदी लगाकर गले में घंटियाँ भी बाँधी गई।

गौमाता के लिये आयोजित अन्कूट महोत्सव में गायों के लिये 15 क्विंटल शुद्ध गुड की लापसी एवं 4 क्विंटल कच्ची सब्जियों का आहार गौवंश को करवाया गया। गौपूजन के दौरान गायों को रजत के आभूषण भी पहनाये गये। गौमाता की विशेष पूजा पंडित विक्रम भारद्वाज द्वारा सम्पन्न करवाई गई। इस दौरान गौशाला में कार्यरत सभी गौसेवकों का सम्मान कर उन्हें नवीन वस्त्र प्रदान किये गये।

जीरन की श्री महावीर गोशाला में गोपाष्टमी पर्व हर वर्ष बड़े स्तर पर मनाया जाता है जिसमें नगरवासी एवं आसपास के नागरिक बड़ी संख्या में सम्मलित होते है। गोपाष्टमी के आयोजन में सर्वप्रथम गौमाता के विशेष पूजन किया गया उसके बाद सभी गायों को मेवा युक्त गुड़ दलिया लापसी,हरी सब्जी,फल आदि का भोग लगाया गया। गोपाष्टमी पर गोमाता के लिए अन्नकूट का यह अनूठा आयोजन पूरे मालवांचल में सिर्फ जीरन की गोशाला में आयोजित किया जाता है। जीरन गोशाला में 500 से अधिक गौवंश है। सोमवार को प्रातः 11 बजे प्रारंभ हुए इस आयोजन में बडी संख्या में नागरिकों ने इस पुनीत आयोजन में हिस्सा लिया।

कार्यक्रम में गौशाला अध्यक्ष तरुण बाहेती,सचिव किशनलाल कुड़ीवाला,जिला उपसंचालक केके शर्मा,नारायण दास बाहेती,ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष विनोद दक, दक्षिण मंडल अध्यक्ष मधुसूदन राजोरा,पर्वत सिंह जाट,रविन्द्र सिंहल,डॉ धाकड़, रामप्रताप जाट,शांतिलाल कुड़ीवाला, पार्षद दिलीप सुथार,विपिन पुरोहित, राधेश्याम भूत,दुर्गाशंकर भट्ट,राम प्रहलाद भाणेज, दिनेश भाणेज,विजय भूत, पन्नालाल सगवारिया,मनोहर पाटीदार, शोभाराम मेघवाल,राजेश बाहेती, अनिल मिंडावत,हेमन्त जाट,गोपाल पाटीदार ग्वाल तालाब, पंडित विक्रम भारद्वाज सहित कई गणमान्य नागरिकों ने गौपूजन कर गौपाष्टमी पर्व मनाया।

जीरन स्थित श्री महावीर गौशाला पिछले 24 वर्षों से गौसेवा के कार्य में संचालित है। करीब 10 बीघा परिसर में फैली गौशाला में 500 से अधिक गौवंश हैं तथा इनकी देखभाल हेतु 13 कर्मचारी तथा एक स्थाई डॉक्टर पदस्थ है। श्री महावीर गौशाला जीरन में मालवांचल में गौपाष्टमी पर्व पर गौमाता के लिये अन्नकूट का पहला अनूठा आयोजन होता है।

मतगणना को लेकर बीजेपी-कांग्रेस अलर्ट

प्रत्याशियों को देंगे टिप्स

भोपाल। मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव की मतगणना को लेकर चुनाव आयोग के साथ-साथ भाजपा कांग्रेस भी पूरी तरह से अलर्ट है। किसी भी प्रकार की गड़बड़ी को रोकने के लिए दोनों ही प्रमुख दल अपने-अपने प्रत्याशियों और काउंटिंग में बैठने वाले एजेंट को खास टिप्स देंगे। इसके लिए बीजेपी और कांग्रेस ने अपने-अपने स्तर पर तैयारियां भी कर ली हैं। बता दें, 17 नवंबर को एमपी की 230 सीटों पर मतदान हुआ है, इसकी मतगणना तीन दिसंबर को होगी।

इधर, कांग्रेस ने अपने सभी 230 उम्मीदवारों को ट्रेनिंग के लिए राजधानी भोपाल में 26 तारीख को बैठक रखी है। इसके लिए उन्हें भोपाल बुलाया गया है। इस ट्रेनिंग कैम्प में सभी प्रत्याशियों को मतगणना से संबंधित जानकारी और ट्रेनिंग दी जाएगी। प्रत्याशियों के साथ एजेंट्स को भी टिप्स दिए जायेंगे।

बीजेपी ने भी की बैठक

इधर, भाजपा के शीर्ष नेताओं ने भी काउंटिंग की तैयारियों को लेकर बीजेपी ऑफिस में बैठक की। इसमें मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा, केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर और संगठन मंत्री हितानंद शर्मा शामिल हुए। बैठक में मतगणना को लेकर चर्चा की गई और इसके लिए रणनीति बनाई गई।

आयोग ने भी की वीसी

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी अनुपम राजन ने भी मतगणना की तैयारियों को लेकर समीक्षा बैठक ली। उन्होंने वीसी के माध्यम से सभी जिला निर्वाचन अधिकारी को निर्देश दिए। राजन ने कहा कि स्ट्रांग रूम का प्रति दिन दो बार सुबह और शाम निरीक्षण करें। विधानसभा क्षेत्रों के लिये आवश्यकता के अनुरूप मतगणना टेबिल लगाएं। सभी मतगणना कर्मियों को विधिवत प्रशिक्षण दिया जाये, जिससे किसी भी स्तर पर मतगणना में देरी न हो। प्रत्येक मतगणना टेबल पर एक-एक माइक्रो ऑब्जर्वर भी नियुक्त करें।

युवती को बनाया हवस का शिकार, पुलिस कर्मी के खिलाफ केस

बालाघाट। रक्षक ने ही भक्षक बनकर एक युवती को अपनी हवस का शिकार बना डाला। दरअसल, बालाघाट जिले से शहर प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रही युवती को पहले तो पुलिस कर्मी ने पीछा कर परेशान किया और वर्दी का रौब दिया, फिर जबरदस्ती उससे बात करने लगा। इसके बाद शादी का झांसा देकर उसका दैहिक शोषण किया। बाद में पीड़िता को पता चला कि आरोपी आरक्षक जयपाल शादीशुदा है, जिसके दो बच्चे भी हैं।

इतना ही नहीं आरोपी ने पीड़िता के अश्लील वीडियो व फोटो अपने अन्य साथियों को भी फेसबुक पर भेजे। पीड़िता की शिकायत पर महिला थाना पुलिस ने आरोपी आरक्षक जयपाल सोलंकी के खिलाफ दुराचार सहित अन्य धाराओं के तहत प्रकरण दर्ज कर उसे न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी अनुसार, मूलतः खरगौन निवासी जयपाल सोलंकी पुलिस विभाग में आरक्षक के पद पर पदस्थ है। पीड़िता रागिनी (बदला हुआ नाम) उम्र 32 वर्ष बालाघाट वारासिवनी से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिये वर्ष 2018 में शहर आई थी। जो कि एडवोकेट कालोनी के एक हॉस्टल में अपनी सहेलियों के साथ रहती थी। उसके आते-जाते वक्त आरोपी जयपाल उसका पीछा करने लगा और बात करने के लिये दवाब बनाने लगा। पीड़िता ने डर के मारे आरोपी से बात करनी शुरू कर दी। पीड़िता ने अपनी शिकायत में बताया कि बातचीत के दौरान ही जयपाल ने उससे प्यार का इजहार किया और शादी करने का झांसा दिया।

स्वामी प्रकाशक राजेश लक्षकार के लिए मुद्रक प्रेमप्रकाश जैन के द्वारा नाकोड़ा ग्राफिक्स सिस्टम एण्ड प्रिंटर्स, 129, विकास नगर, नीमच (म.प्र.) से मुद्रित कर 51 पीपल चौक जीरन, जिला-नीमच से प्रकाशित। **सम्पादक - राजेश लक्षकार***